ब्रिक्स का संदेश

आज जब विश्व व्यापार में संरक्षणवाद के वापस लौटने का खतरा मंडरा रहा है, ब्रिक्स समूह के देशों ने खुली और समावेशी विश्व अर्थव्यवस्था की मांग दोहराई है। इसके साथ ही इस मंच ने भारत और चीन के बीच हाल में पैदा हुए ऐतिहासिक तनाव को शिथिल करने में भी एक परोक्ष भूमिका निभाई है, जो दोनों देशों की तरक्की के लिए अच्छा रहेगा। चीन के श्यामेन शहर में आयोजित ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन में जारी घोषणापत्र में कहा गया है कि ब्रिक्स देश- ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका संरक्षणवाद का दृढ़ता से विरोध करते रहेंगे।

यह भी कि हम संरक्षणवादी कदमों को वापस लेने और उसे रोकने के लिए अपने मौजूदा संकल्प के प्रति बचनबद्धता दोहराते हैं और अन्य देशों से भी इस प्रतिबद्धता में शामिल होने की गुजारिश करते हैं। ब्रिक्स एक नियम आधारित, पारदर्शी, भेदभाव रहित, खुली और समावेशी बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का पक्षधर है। उसने उदीयमान बाजारों तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की आवाज बुलंद करने और उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाने पर जोर दिया है। उसने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में लंबित कोटा सुधारों को 2019 तक अमली जामा पहनाने की मांग की है ताकि इस बहुपक्षीय संस्थान में विकासशील देशों को और अधिक अधिकार मिल सकें।

ध्यान रहे कि आईएमएफ के कोटा सुधारों से इसके 188 सदस्यीय प्रबंधक मंडल में भारत जैसी उदीयमान अर्थव्यवस्थाओं के लिए वोटिंग अधिकार बढ़ेंगे। घोषणापत्र में यह भी कहा गया है कि ब्रिक्स के देश विश्व बैंक समूह में अंशधारिता की समीक्षा पर भी जोर देते रहेंगे। व्यापार संबंधी बातों के अलावा ब्रिक्स घोषणापत्र में दुनिया के सामने मंडरा रहे संकटों पर भी राय व्यक्त की गई। जैसे आतंकवाद के खिलाफ जारी बयान में कहा गया है कि 'हम तालिबान, आईएसआईएस, अलकायदा और उसके सहयोगी संगठनों, हक्कानी नेटवर्क, लश्करे तैयबा, जैशे मोहम्मद, तहरीके तालिबान पाकिस्तान और हिज्बुत्तहरीर द्वारा की जा रही आतंकी हिंसा की निंदा करते हैं। इनमें पाकिस्तानी आतंकी संगठनों का नाम शामिल किए जाने को भारत अपनी कूटनीतिक जीत मान रहा है।

बहरहाल, ब्रिक्स का यह सम्मेलन इस मायने में अहम है कि इसने अमेरिका और अन्य विकसित देशों को साफ संकेत दिया है कि कारोबार में सिर्फ अपना हित देखने के घातक प्रभाव होंगे। एकाधिकारवादी प्रवृत्ति को वापस लौटने से रोकना होगा, वर्ना इससे पूरी दुनिया का नुकसान होगा। आज ग्लोबलाइजेशन ने विश्व को जहां तक पहुंचा दिया है, वहां से पीछे लौटने में हर किसी का नुकसान है। सभी देशों को मिल-जुलकर, एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर चलना होगा, तभी हर किसी की तरक्की सुनिश्चित होगी। वैसे यह संदेश देते हुए ब्रिक्स देशों को अपनी खुद की एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों को लेकर भी सजग रहना चाहिए।

संयम के स्वामी

एक बार गांधी जी स्वामीनाथन नामक व्यक्ति के साथ एक स्थान पर ठहरे हुए थे। उनकी सेवा के लिए एक नौकर आया। नौकर से सेवा कार्य के दौरान थोड़ी गलती हो गई। झल्लाए स्वामीनाथन ने नौकर को जोर से थप्पड़ मारा और खूब डांटा भी। नौकर की दीन दशा देखकर गांधी जी बोले-स्वामीनाथन, मैं आपको स्वामी नहीं मानता। क्या स्वामी ऐसा जानवर जैसा व्यवहार करते हैं जैसा कि आपने इस नौकर के साथ किया है। स्वामी वह है जिसने अपने पर संयम साध लिया है। लज्जित स्वामीनाथन ने जीवनभर ऐसा व्यवहार न करने का संकल्प लिया।

रहम का फर्ज भी करें अदा

एक पुरानी कथा है। एक वैद्य जी की वैद्यकी जब अपने इलाके में नहीं चली तो उन्होंने दूसरे शहर जाने की ठानी। उस शहर में पहुंच कर अपने एक पुराने दोस्त सेठ जी के यहां डेरा डाला। सेठ जी उस समय थे नहीं तो सेठानी ने उन्हें भोजन कराया और रात बिताने के लिए उन्हें मेहमानों के कमरे में भेज दिया। देर रात जब सेठ जी लौटे तो सेठानी ने उनके लिए भोजन लगाया। अचानक वैद्य जी के कानों में एक तेज आवाज़ गूंजी। सेठ जी सेठानी को डांट कर कह रहे थे- 'अरे तूने खाने में दही नहीं परोसा?' वैद्य जी सेठ जी की यह मांग सुनकर अपनी प ी से बोले कि अबकी जाड़ों में तुझे सोने का हार दिलवाऊंगा। मगर तभी फिर सेठ जी की आवाज़ उन्हें सुनाई पड़ी- 'सेठानी तेरा दिमाग कहां है, शाम को दही परोसा और भुना हुआ जीरा डालना भूल गई।' यह सुनते ही वैद्य जी अपनी प ी से बोले-हार कैंसिल। जो आदमी शाम को दही जीरे के साथ लेगा उसे बीमारी होने से रही।

अब इसका एक मतलब तो यह है कि रात को दही नहीं खाना चाहिए और अगर खाया जाए तो उसमें भुना हुआ जीरा डालना अनिवार्य है। मगर इसका एक मतलब यह भी निकलता है कि वैद्य अथवा डाक्टर के लिए दोस्ती का कोई मतलब नहीं, उन्हें हर बीमार अपना क्लाइंट नज़र आता है, जिससे वे दवा के बदले पैसा उगाह सकते हैं।

इसीलिए लोग कहते हैं कि जिस मौसम में बीमारियां बढ़ती हैं वही मौसम डाक्टरों के लिए सबसे ज्यादा मुफीद होता है। वही मौसम डाक्टरों की जेबें भरता है। दुख है कि कुछ डाक्टरों ने अपनी हरकत से अपनी यही छवि बनाई हुई है। इसका खमियाजा उन डाक्टरों को भी भुगतना पड़ता है जो एक मिशन के लिए डाक्टरी कर रहे हैं। चिकित्साएक सेवा है। मगर ऐसे व्यवसाय को कुछ लोगों ने गन्दा कर दिया है। आज भी डाक्टर अपना प्रिस्क्रिपशन लिखने के पूर्व पर्चे पर आरएक्स लिखता है। आरएक्स यानी वी ट्रीट्स, ही क्योर्स, यहां ही का मतलब ईश्वर से है।

लेकिन आज वह अपने मरीज को उसकी माली हालत को देखकर ही ट्रीट करता है क्योंकि उसे पूरा भरोसा है कि जब उसे ही क्योर करना है तो अगर वह ऊपर वाला चाहेगा तो यह मरीज क्योर हो जाएगा, फिलहाल तो मेरा काम इसकी जेब खाली कराना है। यही कारण है कि इलाज के लिए अब नब्ज नहीं बल्कि जेब देखी जाती है और जेब के अनुसार ही इलाज होता है। तमाम तरह के टेस्ट और टेस्ट के बाद एडवांस टेस्ट तो यही कहानी कहते हैं। हालांकि इस बात से असहमत नहीं हुआ जा सकता कि इन पैथॉलाजी टेस्ट से मरीज के रोग का सही-सही इलाज करना आसान हो गया है लेकिन अगर डॉक्टर अनुभवी है तो वह रोग को तत्काल पकड़ लेगा और अगर बहुत जटिल हुआ तो एकाध टेस्ट से ही वह रोग को समझ लेगा। मगर आज डॉक्टर फालतू में ही इतने टेस्ट करा देगा कि रोगी का दम तो वैसे ही फूलने लगेगा।

यही नहीं, सारे टेस्ट भी और अल्ट्रासाउंड भी। संभव है कि डॉक्टर इसके बाद भी रोग न पकड़ पाए। एक सामान्य बुखार के लिए आज डॉक्टर राजरोग की तरह इलाज करते हैं। नतीजतन एक गरीब आदमी तो इलाज करा ही नहीं पाता और बिना इलाज के बेचारे को मरना पड़ता है। आमतौर पर मौसम बदलने के चलते प्रकृति और वातावरण में कई तरह के परिवर्तन होते हैं। इनकी वजह से कुछ मौसमी बीमारियां आम हो गई हैं। मलेरिया, टायफायड और बदहजमी की समस्या इसके कारण ही पैदा होती है। लेकिन आज तक देश के डॉक्टरों ने ऐसा कोई टीका ईजाद नहीं किया जो मलेरिया को जड़ से हटा दे। डेंगू, चिकनगुनिया, बर्ड फ्लू आदि बीमारियां ऐसे ही बैक्टीरिया से पनपती हैं।

मौसम गुजरने के बाद इनका कहर कम होने लगता है तो डॉक्टर और सरकार सब बेखबर हो जाते हैं। अगर मलेरिया का टीका ईजाद कर लिया गया होता तो बहुत-सी बीमारियां जड़ से खत्म हो चुकी होतीं। इसी तरह अगर पीने के पानी की शुद्धता पर ध्यान दिया गया होता तो टायफायड से लेकर यूटीआई व किडनी के रोगों पर काबू पा लिया गया होता। मगर यहां न तो नई दवाओं को ईजाद करने पर जोर दिया गया और न ही खानपान की शुद्धता पर। नतीजा सामने है कि हर पांच भारतीय में से एक या तो मधुमेह का शिकार है अथवा रक्तचाप का या पेट जनित बीमारियों का।

गोरखपुर में अकेले एक महीने में सौ से ज्यादा बच्चे मर गए क्योंकि उन बच्चों के मां-बाप इलाज़ का खर्च नहीं उठा सकते थे। इसलिए यह सरकार का कर्तव्य है कि वह देशवासियों के लिए मुफ्त इलाज़ की व्यवस्था करे। एक अच्छा और बेहतर समाज वही है जहां हर मनुष्य के अंदर करुणा हो। परस्पर करुणा से ही एक-दूसरे के कष्ट और पीड़ा को दूर किया जा सकता है। एक अच्छे डाक्टर का यह दायित्व तो बनता ही है कि वह अपने कौशल और ज्ञान का इस्तेमाल पीड़ित मानवता का कष्ट दूर करने में करे।

ब्रैंड आईपीएल आसमानी

आईपीएल के ग्लोबल मीडिया राइट्स पर अगले पांच वर्षों के लिए स्टार इंडिया ने कब्जा कर लिया है। फेसबुक, रिलायंस जियो, भारती एयरटेल और सोनी को पछाड़ कर हासिल किए गए इस सौदे की सबसे खास बात इसमें निहित रकम (16347.50 करोड़ रुपये) को माना जा रहा है। अब तक मीडिया राइट्स सोनी पिक्चर्स नेटवर्क के पास थे, जिसने 2008 में 8200 करोड़ रुपये में दस साल के लिए यह अधिकार हासिल किया था। इस लिहाज से इस बार आधी अवधि के लिए दोगुनी रकम एकबारगी ज्यादा लग सकती है। लेकिन यह भी ध्यान में रखना होगा कि 2007 में अस्तित्व में आया आईपीएल ब्रैंड इस बीच लगातार बड़ा होता गया है।

इस दौरान आईपीएल को लेकर कई सारे विवाद हुए, स्पॉट फिक्सिंग से लेकर, घपले-घोटाले तक के आरोप लगे, इसके फाउंडर कमिश्नर ललित मोदी को देश छोड़ना पड़ा, चेन्नै सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स जैसी टॉप टीमें दो सत्रों के लिए निलंबित कर दी गई, फिर भी आईपीएल का ब्रैंड चमकता ही रहा। फैंस की दीवानगी बनी रही तो स्पॉन्सर्स और एडवर्टाइजर्स का तांता भी लगा रहा और बाजार में आईपीएल की तूती बोलती रही। वैसे, इस सौदे को महंगा समझने वाले इस तथ्य की भी अनदेखी कर रहे हैं कि विश्व अर्थव्यवस्था में हो रही उथल-पुथल के बावजूद दुनिया में खेल का बाजार तेजी से फैला है।

इसकी विशालता का अंदाजा हाल में फुटबॉल खिलाड़ियों को लेकर हुए करारों से हो जाता है। सिर्फ नेमार के एक क्लब से दूसरे क्लब में हस्तांतरण पर ही 26.3 करोड़ डॉलर खर्च कर दिए गए। यह सही है कि फुटबॉल और क्रिकेट के बीच फिलहाल कोई तुलना नहीं की जा सकती, लेकिन यह मानना भी गलत होगा कि क्रिकेट कभी फुटबॉल के आसपास तक नहीं पहुंच सकता। जिस तेजी से क्रिकेट का मार्केट फैला है, उसकी भी कुछ समय पहले तक कल्पना कौन कर सकता था/ हां, यह जरूर है कि आईपीएल को अगर लगातार आगे बढ़ना है और दक्षिण अफ्रीका में शुरू हो रही अपने जैसी ही लीग से हर हाल में आगे दिखना है तो उसे क्रिकेट का स्तर एक पायदान ऊपर उठाना होगा।

लोकतंत्र की रूह को बंदी बनाने वाले

जब आप रोशनदान खोलते हैं तो ताज़ा हवा के साथ मक्खी-मच्छर भी अंदर आ जाते हैं। बिल्कुल इसी तरह जब आप जम्हूरियत का रोशनदान खोलते हैं तो आज़ादी की हवा के साथ वे चलन भी अंदर घुस आते हैं, जिन्होंने लाखों दिमाग़ों पर पहले से ही कब्ज़ा कर रखा होता है। और फिर वो इस कब्ज़े से मिलने वाली ताकत को लोकतंत्र की रूह को बंदी बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। और फिर यूं होता है कि जिसके पास जितने ग़ुलाम, उतनी ही उसकी वाह-वाह। वोट लेना है तो ग़ुलामों के राजा की चौखट पर तो आना ही पड़ेगा, माथा तो रगड़ना ही पड़ेगा। भला राजा से कौन सवाल पूछ सकता है?

आप सेक्युलर हों या नॉन सेक्युलर, गुरुजी की चौखट पर आप सिर्फ एक भिखारी हैं। सिंध में सब जानते हैं कि हजरत मियां मिट्ठू किस तरह से लोगों का धर्म बदलवाते हैं। उनके मुरीदों की संख्या चूंकि लाखों में है, इसलिए मुस्लिम लीग हो, पीपल्स पार्टी या इमरान की तहरीक-ए-इंसाफ़, मियां मिट्ठू सबके दुलारे हैं। विदेशी मामलों के पूर्व मंत्री शाह महमूद क़ुरैशी अगर हज़रत भाउद्दीन ज़िकरिया के गद्दीनशीं न होते तो मेरी तरह के ही शरीफ़ आदमी होते। बेग़म आबिदा हुसैन अगर गद्दीनशीं न होतीं तो उनके अमेरिका में पाक का राजदूत या मरकज़ में मंत्री बनने की उतनी ही संभावना होती, जितनी मेरी है।

नवाज़ शरीफ़ हों या स्वर्गीय बेनज़ीर भुट्टो, दोनों एबटाबाद के छड़ी बाबा के पास इस आस में जाते रहे कि बाबा जी अगर एक डंडा पीठ पर मार देंगे तो नसीब खुल जाएगा। आसिफ़ ज़रदारी के साथ पीर एज़ाज़ शाह भी पूरे पांच साल राष्ट्रपति भवन में विराजमान रहे। भूतपूर्व प्रधानमंत्री यूसुफ रज़ान गिलानी तो माशाअल्लाह खुद पीर हैं। ऑक्सफोर्ड के पढ़े-लिखे इमरान ख़ान भी पाक पतन की एक पीरानी बुशरा पिंकी बीवी के मुरीद हैं और उनकी कोई सलाह नहीं टालते। मगर जैसे दूध में मक्खी गिर जाती है, उसी तरह बहुत से अच्छे पीरों, साधुओं और बाबाओं में भी कुछ फ्रॉडी खाल पहनकर घुस आते हैं और फिर एक दिन सवालों की हांडियां चौक पर फूट जाती हैं। अब अगर सिरसा वाले बाबा को रेप केस में सज़ा न मिलती तो फिर यह सवाल भी न उठता कि उनका चाल-चलन कैसा है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. भारत का एक पड़ोसी देश 4. जगन्नाथ, संसार के स्वामी, परमेश्वर 6. थामने की क्रिया, रोककर रखने की शक्ति 8. धनुष, सैन्य टुकड़ी 9. स्वदेश, मातृभूमि 10. माप, मापने की क्रिया 11. बगीचे की देख-रेख करने वाला, बागबान, माला बनाने व बेचने वाली एक जाति, आर्थिक 12. दानी होने का भाव 14. लाभ, फायदा 15. रक्त, लहू, वध 16. चालीस किलोग्राम की तौल, अंत:करण 17. सोचना, विचार करना 19. प्रतीति, विश्वास 20. टकराव, मुड़भेड़ 21. पांच से छोटी एक विषम संख्या 22. नर्म, मुलायम।

ऊपर से नीचे

1. रंगमंच के पर्दे के पीछे की जगह, वेशभूषा, रंगशाला 2. पवित्र, निर्मल, भोजन पकाने की क्रिया, रसोई 3. बाल्यावस्था, लड़कों सा आचार व्यवहार 4. संसार, दुनिया, जगत 5. हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार 7. तुरत-फुरत, बात की बात में, तुरंत 10. अबोध, मूर्ख 11. मां, जननी 13. सूनसान, उजाड़, जनहीन 14. खारा, नमक के स्वाद जैसा 15. शुष्क हृदय, मूर्ख 17. मृत्यु को प्राप्त होना 18. नया, नव 19. अनाथ, बेसहारा।

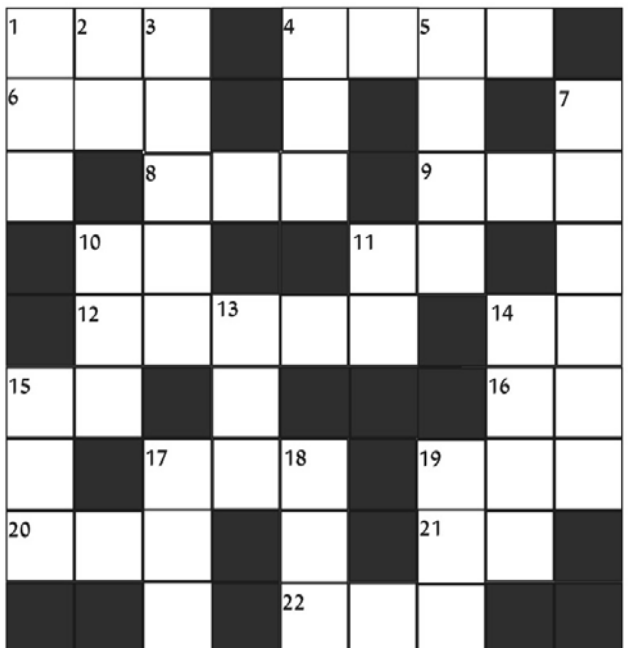

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 65 का हल

मु	हा	व	रा	■	त	क	ली	फ
ज	■	र	ज	नी	श	■	प	ल
रा	व	ण	■	■	री	झ	ना	■
■	ह	■	■	स	फ	र	■	न
■	म	हा	रा	जा	■	ना	य	क
वि	■	र	■	या	न	■	■	च
प्र	भु	■	को	फ्ता	■	■	क	ढ़ा
■	जं	■	■	■	प्या	■	य	■
अ	ग	र	म	ग	र	क	र	ना

सू-दोकू

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.65 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5	4	6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

राशिफल

मेष- यह समय सभी के लिए फायदेमंद रहेगा, व्यापार मालिकों और नौकरी पेशा दोनों के लिए धन लाभ का समय है। इस अवधि में आप अपने प्रतिस्पर्धियों पर हावी रहेंगे।

वृष- पारिवारिक सुख व धन बढ़ेगा, इस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा और काफी समय से चली आ रही स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से मुक्ति मिलेगी।

मिथुन- अधिकतर समय अपने काम में ध्यान देने से ज्यादा अपने कार्य के विषय में या अपने कार्य स्थान के बारे में अनावश्यक ही चर्चा करते रहने से आप अपना सौ प्रतिशत नहीं दे पाएंगे।

कर्क- आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है तथा सभी क्षेत्रों में लाभ प्राप्ति के योग बन रहे हैं। प्रेम संबंधों के प्रति आपका झुकाव अधिक रहेगा।

सिंह- आप अपने बिजनस अथवा ऑफ़िस की ओर से लंबी यात्रा पर जा सकते हैं। आपकी यह यात्रा विदेश से जुड़ी हो सकती है।

कन्या- जीवनसाथी की भावनाओं को समझें। किस्मत का सितारा बदल रहा है, लेकिन मजबूत इच्छाशक्ति के बिना आप कामयाबी नहीं पा सकेंगे।

तुला- किसी भी कार्य में प्रमाद हानिकारक होगा। आपको अपने परिवार के स्वास्थ्य, बीमारी या अन्य किसी क्षति पर कुछ पैसा खर्च करना पड़ सकता है।

वृश्चिक- विदेश यात्रा का योग है, जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है, पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी।

धनु- विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम है, संतान की ओर से भी शुभ समाचार मिल सकता है, वाद-विवाद से मानसिक कष्ट बढ़ेगा।

मकर- यदि आप आपके लिए कुछ नया शुरू करने की योजना बना रहे हैं, तो जल्दबाजी ना करें, सभी पक्षों का सही से मूल्यांकन करें उसके बाद ही कोई निर्णय करें।

कुंभ- आपकी स्वास्थ्य सम्बन्धी चिंताएं बढ़ सकती हैं। सहनशक्ति से काम लें और कार्यक्षेत्र में दूसरो के सामने अपने को असहज महसूस न होने दें।

मीन- आपको भरपूर भाग्य का सहारा मिलेगा। व्यापार अथवा कार्यक्षेत्र में दिन लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह कर पाएंगे।